

सूरह कहफ़ - 18



सूरह कहफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 110 आयतें हैं।

- इस में कहफ़ (गुफा) वालों की कथा का वर्णन है, जिस से दूसरे जीवन का विश्वास दिलाया गया है।
- इस में नसारा (ईसाईयों) को चेतावनी दी गयी है जिन्होंने अल्लाह का पुत्र होने की बात घड़ ली। और शिर्क में उलझ गये, जिस से तौहीद पर आस्था का कोई अर्थ नहीं रह गया।
- इस में दो व्यक्तियों की दशा का वर्णन किया गया है जिन में एक संसारिक सुख में मग्न था और दूसरा परलोक पर विश्वास रखता था। फिर जो संसारिक सुख में मग्न था, उस का दुष्परिणाम दिखाया गया है और संसारिक जीवन का एक उदाहरण दे कर बताया गया है कि परलोक में सदाचार ही काम आयेगा।
- इस में मुसा (अलैहिस्सलाम) की यात्रा का वर्णन करते हुये अल्लाह के ज्ञान के कुछ भेद उजागर किये गये हैं, ताकि मनुष्य यह समझे की संसार में जो कुछ होता है उस में कुछ भेद अवश्य होता है जिसे वह नहीं जान सकता।
- इस में (जुल करनैन) की कथा का वर्णन कर के यह दिखाया गया है उस ने कैसे अल्लाह से डरते हुये और परलोक की जवाब देही (उत्तर दायित्व) का ध्यान रखते हुये अपने अधिकार का प्रयोग किया।
- अन्त में शिर्क और परलोक के इन्कार पर चेतावनी है।

हदीस में है कि जो सूरह कहफ़ के आरंभ की दस आयतें याद कर ले तो वह दज्जाल के उपद्रव से बचा लिया जायेगा। (सहीह मुस्लिम, 809)। दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति रात में सूरह कहफ़ पढ़ रहा था और उस का घोड़ा उस के पास ही बंधा हुआ था कि एक बादल छा गया और समीप आता गया और घोड़ा बिदकने लगा। जब सवेरा हुआ तो उस ने यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बतायी। आप ने कहा: यह शान्ति थी जो कुर्आन के कारण उतरी थी। (बुखारी: 5011, मुस्लिम: 795)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस ने अपने भक्त पर यह पुस्तक उतारी। और उस में कोई टेढ़ी बात नहीं रखी।
2. अति सीधी (पुस्तक), ताकि वह अपने पास की कड़ी यातना से सावधान कर दे, और ईमान वालों को जो सदाचार करते हों, शुभ सूचना सुना दे कि उन्हीं के लिये अच्छा बदला है।
3. जिस में वे नित्य सदावासी होंगे।
4. और उन को सावधान करे जिन्होंने ने कहा कि अल्लाह ने अपने लिये कोई संतान बना ली है।
5. उन्हें इस का कुछ ज्ञान है, और न उन के पूर्वजों को। बहुत बड़ी बात है जो उन के मुखों से निकल रही है, वह सरासर झूठ ही बोल रहे हैं।
6. तो संभवतः आप इन के पीछे अपना प्राण खो देंगे संताप के कारण, यदि वह इस हदीस (कुर्आन) पर ईमान न लायें।
7. वास्तव में जो कुछ धरती के ऊपर है, उसे हम ने उस के लिये शोभा बनाया है, ताकि उन की परीक्षा लें कि उन में कौन कर्म में सब से अच्छा है?

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۝

قَيِّمًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا لِّمَنْ لَّدُنْهُ وَيُبَيِّنَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۝

مَا كُنْشِينَ فِيهِ أَبَدًا ۝

وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۝

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كِبًا ۝

فَلَعَلَّكَ بَاطِلٌ غَفُوكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِذِهِ الْحَدِيثِ آسَفًا ۝

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۝

8. और निश्चय हम कर देने^[1] वाले हैं, जो उस (धरती) के ऊपर है उसे (बंजर) धूल।
9. (हे नबी!) क्या आप ने समझा है कि गुफा तथा शिला लेख वाले^[2], हमारे अद्भुत लक्षणों (निशानियों) में से थे?^[3]
10. जब नवयुवकों ने गुफा की ओर शरण ली^[4], और प्रार्थना की: हे हमारे पालनहार! हमें अपनी विशेष दया प्रदान कर, और हमारे लिये प्रबंध कर दे हमारे विषय के सुधार का।

وَاِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ
كَانُوا مِنْ اٰیَاتِنَا عَجَبًا ۝

اِذْ اَوٰى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا اٰتِنَا
مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا
رَشَدًا ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

2 कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि (रकीम) शब्द जिस का अर्थ: शिला लेख किया गया है, एक बस्ती का नाम है।

3 अर्थात् आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति हमारी शक्ति का इस से भी बड़ा लक्षण है।

4 अर्थात् नवयुवकों ने अपने ईमान की रक्षा के लिये गुफा में शरण ली। जिस गुफा के ऊपर आगे चलकर उन के नामों का स्मारक शिला लेख लगा दिया गया था।

उल्लेखों से यह विद्वित होता है कि नवयुवक ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में से थे। और रोम के मुशरिक राजा की प्रजा थे। जो एकेश्वरवादियों का शत्रु था। और उन्हें मुर्ति पूजा के लिये बाध्य करता था। इस लिये वे अपने ईमान की रक्षा के लिये जार्डन की गुफा में चले गये जो नये शोध के अनुसार जार्डन की राजधानी से 8 की० मी० दूर (रजीब) में अवशेषज्ञों को मिली है। जिस गुफा के ऊपर सात स्तंभों की मस्जिद के खंडर, और गुफा के भीतर आठ समाधियाँ तथा उत्तरी दीवार पर पुरानी यूनानी लिपी में एक शिला लेख मिला है और उस पर किसी जीव का चित्र भी है। जो कुत्ते का चित्र बताया जाता है और यह (रजीब) ही (रकीम) का बदला हुआ रूप है। (देखिये: भाष्य दावतुल कुर्आन-2/983)

11. तो हमने उन्हें गुफा में सुला दिया कई वर्षों तक।
12. फिर हम ने उन्हें जगा दिया ताकि हम यह जान लें कि दो समुदायों में से किस ने उन के ठहरे रहने की अवधि को अधिक याद रखा है?
13. हम आप को उन की सत्य कथा सुना रहे हैं। वास्तव में वे कुछ नवयुवक थे, जो अपने पालनहार पर ईमान लाये, और हम ने उन्हें मार्गदर्शन में अधिक कर दिया।
14. और हम ने उन के दिलों को सुदृढ़ कर दिया जब वे खड़े हुये, फिर कहा: हमारा पालनहार वही है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है। हम उस के सिवा कदापि किसी पूज्य को नहीं पुकारेंगे। (यदि हम ने ऐसा किया) तो (सत्य से) दूर की बात होगी।
15. यह हमारी जाति है, जिस ने अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य बना लिये। क्यों वे उन पर कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या बात बनाये?
16. और जब तुम उन से विलग हो गये तथा अल्लाह के अतिरिक्त उन के पूज्यों से, तो अब अमुक गुफा की ओर शरण लो, अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी दया फैला देगा, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे विषय में जीवन के

فَضَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَمْ يُوَاعِدْهُمَا ۝

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْنَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝

وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَن نَدْعُو مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذْ شَطَطًا ۝

هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِنْهُمْ ۝

وَإِذَا عَزَلْتَهُمْ هُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ قَالُوا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرٍ مُرَقَّعًا ۝

साधनों का प्रबंध करेगा।

17. और तुम सूर्य को देखोगे, कि जब निकलता है, तो उन की गुफा से दायें झुक जाता है, और जब डूबता है, तो उन से बायें कतरा जाता है। और वह उस (गुफा) के एक विस्तृत स्थान में है। यह अल्लाह की निशानियों में से है, और जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे वही सुपथ पाने वाला है। और जिसे कुपथ कर दे तो तुम कदापि उस के लिये कोई सहायक मार्ग दर्शक नहीं पाओगे।

18. और तुम^[1] उन्हें समझोगे कि जाग रहे हैं जब कि वह सोये हुये हैं और हम उन्हें दायें तथा बायें पार्श्व पर फिराते रहते हैं, और उन का कुत्ता गुफा के द्वार पर अपनी दोनों बांहें फैलाये पड़ा है। यदि तुम झाँक कर देख लेते तो पीठ फेर कर भाग जाते, और उन से भय पूर्ण हो जाते।

19. और इसी प्रकार हम ने उन्हें जगा दिया ताकि वे आपस में प्रश्न करें। तो एक ने उन में से कहा: तुम कितने (समय) रहे हो? सब ने कहा: हम एक दिन रहे हैं अथवा एक दिन के कुछ (समय)। (फिर) सब ने कहा: अल्लाह अधिक जानता है कि तुम कितने (समय) रहे हो, तुम अपने में से किसी को अपना यह सिक्का दे कर नगर में भेजो, फिर देखे कि किस के पास अधिक स्वच्छ (पवित्र)

وَرَوَى الشَّمْسُ إِذَا طَلَعَتْ تَوَّارِعُنَ كَهْفِهِمْ
ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرَّبُ مِنْهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ
وَهُمْ فِي قُبُورِهِمْ ذُلُّهُ مِنْ ذَلِكَ مِنَ الْآيَاتِ الَّتِي اللَّهُ مِّنْ
يَعْبُدُ اللَّهُ فَهُوَ الْمُفْتَدٍ وَمَنِ يُضِلِلْ فَلَن يَجِدَ لَهُ
وَلِيًّا مَّزِيدًا ۝

وَنَحْسَبُهُمْ آيَاتًا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ
الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ
ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ
فِرَارًا وَلَإِنَّ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ قَالَ قَائِلٌ
مِّنْهُمْ كَمْ لَبِستمُ قَالَوا لَبِستنا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ
يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِستمُ فَاذْعَبُوا
أَحَدُكُمْ يُورِقُكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ
فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ
وَلْيَكَلِّفْ وَلَا تَشْعِرَنَّ بِكُمْ
أَحَدًا ۝

1 इस में किसी को भी संबोधित माना जा सकता है, जो उन्हें उस दशा में देख सके।

भोजन है, और उस में से कुछ जीविका (भोजन) लाये, और चाहिये कि सावधानी बरतो! ऐसा न हो कि तुम्हारा किसी को अनुभव हो जाये।

20. क्यों कि यदि वे तुम्हें जान जायेंगे तो तुम्हें पथराव कर के मार डालेंगे, या तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, और तब तुम कदापि सफल नहीं हो सकोगे।

21. इसी प्रकार हम ने उन से अवगत करा दिया, ताकि उन (नागरिकों) को ज्ञान हो जाये कि अल्लाह का वचन सत्य है, और यह कि प्रलय (होने) में कोई संदेह^[1] नहीं। जब वे^[2] आपस में विवाद करने लगे, तो कुछ ने कहा: उन पर कोई निर्माण करा दो, अल्लाह ही उन की दशा को भली भाँति जानता है। परन्तु उन्होंने ने कहा जो अपना प्रभुत्व रखते थे, हम अवश्य उन (की गुफा के स्थान) पर एक मस्जिद बनायेंगे।

22. कुछ^[3] कहेंगे कि वह तीन है, और चौथा उन का कुत्ता है। और कुछ कहेंगे कि पाँच है, और छठा उन का कुत्ता है। यह अन्धेरे में तीर चलाते

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ۝

وَكَذَلِكَ أَثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذِ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَعَالُوا الْبُنَّاءَ عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۝

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ

1 जिस के आने पर सब को उन के कर्मों का फल दिया जायेगा।

2 अर्थात् जब पुराने सिक्के और भाषा के कारण उन का भेद खुल गया और वहाँ के लोगों को उन की कथा का ज्ञान हो गया तो फिर वे अपनी गुफा ही में मर गये। और उन के विषय में यह विवाद उत्पन्न हो गया।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इस्लाम में समाधियों पर मस्जिद बनाना, और उस में नमाज़ पढ़ना तथा उस पर कोई निर्माण करना अवैध है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा। (सहीह बुखारी, 435, मुस्लिम, 531, 32)

3 इन से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के अहले किताब हैं।

हैं। और कहेंगे कि सात है, और आठवाँ उन का कुत्ता है। (हे नबी!) आप कह दें, कि मेरा पालनहार ही उन की संख्या भली भाँति जानता है, जिसे कुछ लोगों के सिवा कोई नहीं जानता।^[1] अतः आप उन के संबन्ध में कोई विवाद न करें सिवाये सरसरी बात के, और न उन के विषय में किसी से कुछ पूछें।^[2]

23. और कदापि किसी विषय में न कहें कि मैं इसे कल करने वाला हूँ।

24. परन्तु यह कि अल्लाह^[3] चाहे, तथा अपने पालनहार को याद करें, जब भूल जायें। और कहें: संभव है मेरा पालनहार मुझे इस से अधिक समीप सुधार का मार्ग दर्शा दे।

25. और वे गुफा में तीन सौ वर्ष रहे। और नौ वर्ष अधिक^[4] और।

26. आप कह दें कि अल्लाह उन के रहने की अवधि से सर्वाधिक अवगत है। आकाशों तथा धरती का परोक्ष वही जानता है। क्या ही खूब है वह देखने

بَعْدَتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تُنَارِفِهِمْ
الْأَمْرَاءَ ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ
أَحَدًا ۖ

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۖ

إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ
وَقُلْ عَلَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِي رَّبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ
هَٰذَا سَبْدًا ۖ

وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ
وَاذْدَادًا وَتَسَعًا ۖ

قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۚ لَهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ أَبْصَرُ بِهِ وَاسْمِعُ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ
مِنْ قَوْلٍ وَلَا يَشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۖ

1 भावार्थ यह है कि उन की संख्या का सहीह ज्ञान तो अल्लाह ही को है किन्तु वास्तव में ध्यान देने की बात यह है कि इस से हमें क्या शिक्षा मिल रही है।

2 क्योंकि आप को उन के बारे में अल्लाह के बताने के कारण उन लोगों से अधिक ज्ञान है। और उन के पास कोई ज्ञान नहीं। इस लिये किसी से पूछने की आवश्यकता भी नहीं।

3 अर्थात् भविष्य में कुछ करने का निश्चय करें, तो "इन् शा अल्लाह" कहें। अर्थात्: यदि अल्लाह ने चाहा तो।

4 अर्थात् सूर्य के वर्ष से तीन सौ वर्ष, और चाँद के वर्ष से नौ वर्ष अधिक गुफा में सोये रहे।

वाला और सुनने वाला! नहीं है उन का उस के सिवा कोई सहायक, और न वह अपने शासन में किसी को साझी बनाता है।

27. और आप उसे सुना दें, जो आप की ओर वही (प्रकाशना) की गयी है आप के पालनहार की पुस्तक में से, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं है, और आप कदापि नहीं पायेंगे उस के सिवा कोई शरण स्थान।

28. और आप उन के साथ रहें जो अपने पालनहार की प्रातः- संध्या बंदगी करते हैं। वे उस की प्रसन्नता चाहते हैं और आप की आँखें संसारिक जीवन की शोभा के लिये^[1] उन से न फिरने पायें और उस की बात न मानें जिस के दिल को हम ने अपनी याद से निश्चेत कर दिया, और उस ने मनमानी की, और जिस का काम ही उल्लंघन (अवैज्ञा करना) है।

29. आप कह दें कि यह सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से तो जो चाहे ईमान लाये, और जो चाहे कुफ्र करे, निश्चय हम ने अत्याचारियों के लिये ऐसी अग्नि तय्यार कर रखी है जिस की

وَأَنشَأْ مَا أَوْحَى إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا تُبَدِّلُ
الْكَلِمَاتِ وَلَكِنْ تَجِدْ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝

وَأَصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ
بِالْغَدَاوَةِ وَالْعِشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ
عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ
هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ۝

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمَرْ
وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا
لِالْمُظْلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ
يَسْتَعِينُوا يُعَاثَوْا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि यह आयत उस समय उतरी जब मुशरिक कुरैश के कुछ प्रमुखों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह माँग की, कि आप अपने निर्धन अनुयायियों के साथ न रहें। तो हम आप के पास आ कर आप की बातें सुनेंगे। इस लिये अल्लाह ने आप को आदेश दिया कि इन का आदर किया जाये, ऐसा नहीं होना चाहिये कि इन की उपेक्षा कर के उन धनवानों की बात मानी जाये जो अल्लाह की याद से निश्चेत हैं।

प्राचीर^[1] ने उन को घेर लिया है, और यदि वह (जल के लिये) गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा जो मुखों को भून देगा, वह क्या ही बुरा पेय है! और वह क्या ही बुरा विश्राम स्थान है!

الْوُجُوهَ يَشْرَبُ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝

30. निश्चय जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तो हम उन का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करेंगे जो सदाचारी हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝

31. यही हैं जिन के लिये स्थायी स्वर्ग है, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे।^[2] तथा महीन और गाढ़े रेशम के हरे वस्त्र पहनेंगे, उस में सिंहासनों के ऊपर आसीन होंगे। यह क्या ही अच्छा प्रतिफल और क्या ही अच्छा विश्राम स्थान है!

أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نَبْوَءُ الثَّوَابِ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝

32. और (हे नबी!) आप उन्हें एक उदाहरण दो व्यक्तियों का दें, हम ने जिन में से एक को दो बाग़ दिये अँगूरों के, और घेर दिया दोनों को खजूरों से, और दोनों के बीच खेती बना दी।

وَأَصْرِبُ لَهُمْ مَثَلًا تَجْلِيَنَ جَعَلْنَا الْأَحَدَ هِمًّا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا سَخِيلَ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ۝

33. दोनों बाग़ों ने अपने पूरे फल दिये, और उस में कुछ कमी नहीं की, और हम ने जारी कर दी दोनों के बीच एक नहर।

كُلَّتَا الْجَنَّتَيْنِ اَّتَتْهُمَا وَلَوْ نَظَرْتُمْ مِنْهُ شَيْئًا وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ۝

1 कुर्आन में «सुरादिक» शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिस का अर्थ प्राचीर, अर्थात् वह दीवार है जो नरक के चारों ओर बनाई गई है।

2 यह स्वर्ग वासियों का स्वर्ण कंगन है। किन्तु संसार में इस्लाम की शिक्षानुसार पुरुषों के लिये सोने का कंगन पहनना हराम है।

34. और उसे लाभ प्राप्त हुआ, तो एक दिन उस ने अपने साथी से कहा: और वह उस से बात कर रहा था, मैं तुझ से अधिक धनी हूँ, तथा स्वजनों में भी अधिक¹ हूँ।

35. और उस ने अपने बाग में प्रवेश किया अपने ऊपर अत्याचार करते हुये, उस ने कहा: मैं नहीं समझता कि इस का विनाश हो जायेगा कभी।

36. और न यह समझता हूँ कि प्रलय होगी। और यदि मुझे अपने पालनहार की ओर पुनः ले जाया गया, तो मैं अवश्य ही इस से उत्तम स्थान पाऊँगा।

37. उस से उस के साथी ने कहा, और वह उस से बात कर रहा था: क्या तू ने उस के साथ कुफ़र कर दिया, जिस ने तुझे मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर वीर्य से, फिर तुझे बना दिया एक पूरा पुरुष?

38. रहा मैं तो वही अल्लाह मेरा पालनहार है, और मैं साझी नहीं बनाऊँगा अपने पालनहार का किसी को।

39. और क्यों नहीं जब तुम ने अपने बाग में प्रवेश किया, तो कहा कि "जो अल्लाह चाहे, अल्लाह की शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता।" यदि तू मुझे देखता है कि मैं तुझ से कम हूँ

وَكَانَ لَهُ شَرٌّ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ۝

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ۝

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّدِّدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ۝

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ۝

لَكَئِنْ هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِنَّ رَبِّي أَنَا أَكْثَلُ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ۝

1 अर्थात् यदि किसी का धन संतान तथा बाग़ इत्यादि अच्छा लगे तो ((माशा अल्लाह ला कूव्वता इल्ला बिल्ला)) कहना चाहिये। ऐसा कहने से नज़र नहीं लगती। यह इस्लाम धर्म की शिक्षा है, जिस से आपस में द्वेष नहीं होता।

धन तथा संतान में,^[1]

40. तो आशा है कि मेरा पालनहार मुझे प्रदान कर दे तेरे बाग से अच्छा, और इस बाग पर आकाश से कोई आपदा भेज दे, और वह चिकनी भूमि बन जाये।

41. अथवा उस का जल भीतर उतर जाये, फिर तू उसे पा न सके।

42. (अन्ततः) उस के फलों को घेर^[2] लिया गया, फिर वह अपने दोनों हाथ मलता रह गया उस पर जो उस में खर्च किया था। और वह अपने छप्परो सहित गिरा हुआ था, और कहने लगा: क्या ही अच्छा होता कि मैं किसी को अपने पालनहार का साझी न बनाता।

43. और नहीं रह गया उस के लिये कोई जत्था जो उस की सहायता करता और न स्वयं अपनी सहायता कर सका।

44. यही सिद्ध हो गया कि सब अधिकार सत्य अल्लाह को है, वही अच्छा है प्रतिफल प्रदान करने में, तथा अच्छा है परिणाम लाने में।

45. और (हे नबी!) आप उन्हें संसारिक जीवन का उदाहरण दें उस जल से जिसे हम ने आकाश से बरसाया। फिर उस के कारण मिल गई धरती की उपज, फिर चूर हो गई जिसे वायु

فَعَسَىٰ رَبِّي أَن يُوَفِّيَنَّ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حَبَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَمُصْبِحٌ صَعِيدًا زَلَقًا ۝

أَوْ يُصِيبَهُ مَأْذُهَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝

وَأُحِيطَ بِشَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفْيَهُ عَلَىٰ مَا انْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ لِيَلَيْتَنِي لَمْ أَشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَتَّصِرُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۝

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۝

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلِ الْخَيْلِ الدُّنْيَا كَمَا أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝

1 अर्थात् मेरे सेवक और सहायक भी तुझ से अधिक हैं।

2 अर्थात् आपदा ने घेर लिया।

उड़ाये फिरती^[1] है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है।

46. धन और पुत्र संसारिक जीवन की शोभा है। और शेष रह जाने वाले सत्कर्म ही अच्छे हैं आप के पालनहार के यहाँ प्रतिफल में, तथा अच्छे हैं आशा रखने के लिये।
47. तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे, तथा तुम धरती को खुला चटेल^[2] देखोगे। और हम उन्हें एकत्र कर देंगे, फिर उन में से किसी को नहीं छोड़ेंगे।
48. और सभी आप के पालनहार के समक्ष पंक्तियों में प्रस्तुत किये जायेंगे, तुम हमारे पास आ गये जैसे हम ने तुम्हारी उत्पत्ति प्रथम बार की थी, बल्कि तुम ने समझा था कि हम तुम्हारे लिये कोई वचन का समय निर्धारित ही नहीं करेंगे।
49. और कर्म लेख^[3] (सामने) रख दिये जायेंगे, तो आप अपराधियों को देखेंगे कि उस से डर रहे हैं जो कुछ उस में (अंकित) है, तथा कहेंगे कि हाय हमारा विनाश! यह कैसी पुस्तक है जिस ने किसी छोटे और बड़े कर्म को नहीं छोड़ा है, परन्तु उसे अंकित कर रखा है? और जो कर्म उन्होंने

الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَالْبَاقِيَةُ الصَّالِحَةُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا
وَحَيْرًا مَّالًا ۝

وَيَوْمَ نُسِطُ الْجِبَالَ
وَحَشَرْنَهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝

وَعَرَضْنَا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا
خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ
لَكُمْ مَوْعِدًا ۝

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ
مُسْفِقِينَ فِي مَقَامِهِمْ وَيَقُولُونَ يُبْدِلْنَا مَالًا
هَذَا الْكِتَابُ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً
إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا
وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝

1 अर्थात् संसारिक जीवन और उस का सुख-सुविधा सब साम्यिक है।

2 अर्थात् न उस में कोई चिन्ह होगा तथा न छुपने का स्थान।

3 अर्थात् प्रत्येक का कर्म पत्र जो उस ने संसारिक जीवन में किया है।

ने किये हैं उन्हें वह सामने पायेंगे, और आप का पालनहार किसी पर अत्याचार नहीं करेगा।

50. तथा (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा: आदम को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा। वह जिन्नों में से था, अतः उस ने उल्लंघन किया अपने पालनहार की आज्ञा का, तो क्या तुम उस को और उस कि संतति को सहायक मित्र बनाते हो मुझे छोड़ कर जब कि वह तुम्हारे शत्रु है? अत्याचारियों के लिये बुरा बदला है।

51. मैं ने उन को उपस्थित नहीं किया आकाशो तथा धरती की उत्पत्ति के समय और न स्वयं उन की उत्पत्ति के समय, और न मैं कुपथों को सहायक^[1] बनाने वाला हूँ।

52. जिस दिन वह (अल्लाह) कहेगा कि मेरे साक्षियों को पुकारो जिन्हें समझ रहे थे वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन का कोई उत्तर नहीं देंगे, और हम बना देंगे उन के बीच एक विनाशकारी खाई।

53. और अपराधी नरक को देखेंगे तो उन्हें विश्वास हो जायेगा कि वे उस में गिरने वाले हैं। और उस से फिरने का कोई स्थान नहीं पायेंगे।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۝

مَا أَشْهَدُ لَهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُفْسِدِينَ عَصَدًا ۝

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝

وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاعِدُهَا وَلَمْ يُعَذِّبْهُمُ بِأُحْسَنِ مَصْرُفًا ۝

1 भावार्थ यह है कि विश्व की उत्पत्ति के समय इन का अस्तित्व न था। यह तो बाद में उत्पन्न किये गये हैं। उन की उत्पत्ति में भी उन से कोई सहायता नहीं ली गई, तो फिर यह अल्लाह के बराबर कैसे हो गये?

54. और हम ने इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण से लोगों को समझाया है। और मनुष्य बड़ा ही झगड़ालू है।
55. और नहीं रोका लोगों को कि ईमान लायें जब उन के पास मार्ग दर्शन आ गया और अपने पालनहार से क्षमा याचना करें, किन्तु इसी ने कि पिछली जातियों की दशा उन की भी हो जाये, अथवा उन के समक्ष यातना आ जाये।
56. तथा हम रसूलों को नहीं भेजते परन्तु शुभ सूचना देने वाले और सावधान करने वाले बना कर। और जो काफिर है असत्य (अनृत) के सहारे विवाद करते हैं, ताकि उस के द्वारा वह सत्य को नीचा^[1] दिखायें। और उन्होंने ने बना लिया हमारी आयतों को तथा जिस बात की उन्हें चेतावनी दी गई, परिहास।
57. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयतें सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुँह फेर ले और अपने पहले किये हुये कर्तूत भूल जाये? वास्तव में हम ने उन के दिलों पर ऐसे आवरण (पर्दे) बना दिये हैं कि उसे^[2] समझ न पायें और उन के कानों में बोझ। और यदि आप उन्हें सीधी राह की ओर बुलायें तब (भी) कभी सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَتَىٰ جَدَلًا ۝

وَمَا مَنَعَهُ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا الْيَتَىٰ وَمَا أَنْذَرُوا هُرُوعًا ۝

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذَكَرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِلَّا أَلْبَابًا ۝

1 अर्थात् सत्य को दबा दें।

2 अर्थात् कुर्आन को।

58. और आप का पालनहार अति क्षमी दयावान् है। यदि वह उन को उन के कर्तूतों पर पकड़ता तो तुरन्त यातना दे देता। बल्कि उन के लिये एक निश्चित समय का वचन है। और वे उस के सिवा कोई बचाव का स्थान नहीं पायेंगे।

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبُوا الْعَجَلَ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْئِلًا ۝

59. तथा यह बस्तियाँ हैं। हम ने उन (के निवासियों) का विनाश कर दिया जब उन्होंने अत्याचार किया। और हम ने उन के विनाश के लिये एक निर्धारित समय बना दिया था।

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ۝

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपने सेवक से कहा: मैं बराबर चलता रहूँगा, यहाँ तक कि दोनों सागरों के संगम पर पहुँच जाऊँ, अथवा वर्षा चलता^[1] रहूँ।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۝

61. तो जब दोनों उन के संगम पर पहुँचे तो दोनों अपनी मछली भूल गये। और उस ने सागर में अपनी राह बना ली सुरंग के समान।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝

62. फिर जब दोनों आगे चले गये तो उस (मूसा) ने अपने सेवक से कहा

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي خَشِيتُ أَن تَقُولَ إِنِّي كُنَّا مِنْ الْغَائِبِينَ ۝

1 मूसा अलैहिस्सलाम की यात्रा का कारण यह बना था कि वह एक बार भाषण दे रहे थे। तो किसी ने पूछा कि इस संसार में सर्वाधिक ज्ञानी कौन है? मूसा ने कहा: मैं हूँ। यह बात अल्लाह को अप्रिय लगी। और मूसा से फरमाया कि दो सागरों के संगम के पास मेरा एक भक्त है जो तुम से अधिक ज्ञानी है। मूसा ने कहा: मैं उस से कैसे मिल सकता हूँ? अल्लाह ने फरमाया: एक मछली रख लो, और जिस स्थान पर वह खो जाये, तो वहीं वह मिलेगा। और वह अपने सेवक यूशअ बिन नून को लेकर निकल पड़े। (संक्षिप्त अनुवाद सहीह बुखारी: 4725)।

سَقَرْنَا هَذَا نَصَبًا ۝

कि हमारा दिन का भोजन लाओ। हम अपनी इस यात्रा से थक गये हैं।

63. उस ने कहा: क्या आप ने देखा? जब हम ने उस शिला खण्ड के पास शरण ली थी तो मैं मछली भूल गया। और मुझे उसे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उस की चर्चा करूँ, और उस ने अपनी राह सागर में अनोखे तरीके से बना ली।

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنسَيْنِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۝

64. मूसा ने कहा: वही है जो हम चाहते थे। फिर दोनों अपने पदचिन्हों को देखते हुये वापिस हुये।

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۚ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ۝

65. और दोनों ने पाया, हमारे भक्तों में से एक भक्त^[1] को, जिसे हम ने अपनी विशेष दया प्रदान की थी। और उसे अपने पास से कुछ विशेष ज्ञान दिया था।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا عِلْمًا ۝

66. मूसा ने उस से कहा: क्या मैं आप का अनुसरण करूँ, ताकि मुझे भी उस भलाई में से कुछ सिखा दें, जो आप को सिखायी गई है?

قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ۝

67. उस ने कहा: तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे।

قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

68. और कैसे धैर्य करोगे उस बात पर जिस का तुम्हें पूरा ज्ञान नहीं?

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ۝

69. उस ने कहा: यदि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सहनशील पायेंगे। और मैं आप की किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।

قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۝

1 इस से अभिप्रेत: आदरणीय खिज़्र अलैहिस्सलाम है।

70. उस ने कहा: यदि तुम्हें मेरा अनुसरण करना है तो मुझ से किसी चीज़ के संबन्ध में प्रश्न न करना जब तक मैं स्वयं तुम से उस की चर्चा न करूँ।

71. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब दोनों नौका में सवार हुये तो उस (खिज़्र) ने उस में छेद कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने इस में छेद कर दिया ताकि उस के सवारों को डूबा दें, आप ने अनुचित काम कर दिया।

72. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि तुम मेरे साथ सहन नहीं कर सकोगे?

73. कहा: मुझे आप मेरी भूल पर न पकड़ें, और मेरी बात के कारण मुझे असुविधा में न डालें।

74. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक से मिले तो उस (खिज़्र) ने उसे बध कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने एक निर्दोष प्राण ले लिया, वह भी किसी प्राण के बदले¹ नहीं? आप ने बहुत ही बुरा काम किया।

75. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि वास्तव में तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे?

76. मूसा ने कहा: यदि मैं आप से प्रश्न

قَالَ فَإِنْ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝

فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ۝

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

قَالَ لَا تُؤْخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۝

فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا الْيَاقِينَا غُلِمًا فَقَتَلَهُ ۝ قَالَ أَقَتَلْتُ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا ثَكُورًا ۝

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هَذَا فَلَا تُصِجْنِي ۝

1 अर्थात् उस ने किसी प्राणी को नहीं मारा कि उस के बदले में उसे मारा जाये।

करूँ, किसी विषय में इस के पश्चात्, तो मुझे अपने साथ न रखें। निश्चय आप मेरी ओर से याचना को पहुँच^[1] चुके।

قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۝

77. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव के वासियों के पास आये तो उन से भोजन माँगा। उन्होंने ने उन का अतिथि सत्कार करने से इन्कार कर दिया। वहाँ उन्होंने एक दीवार पायी जो गिरा चाहती थी। उस ने उसे सीधी कर दिया। कहा: यदि आप चाहते तो इस पर पारिश्रमिक ले लेते।

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا آتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبْوَأَ أَنْ يُضَيَّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتُ لَكُنْتُ عَلَيْهِ أَجْرًا ۝

78. उस ने कहा: यह मेरे तथा तुम्हारे बीच वियोग है। मैं तुम्हें उस की वास्तविकता बताऊँगा, जिस को तुम सहन नहीं कर सके।

قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

79. रही नाव तो वह कुछ निर्धनों की थी, जो सागर में काम करते थे। तो मैं ने चाहा कि उसे छिद्रित^[2] कर दूँ, और उन के आगे एक राजा था जो प्रत्येक (अच्छी), नाव का अपहरण कर लेता था।

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝

80. और रहा बालक तो उस के माता-पिता ईमान वाले थे, अतः हम डरे कि उन्हें अपनी अवैज्ञा और अधर्म से दुख न पहुँचाये।

وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۝

81. इसलिये हम ने चाहा कि उन दोनों

فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِمَّا كَانُوا ۝

1 अर्थात् अब कोई प्रश्न करूँ तो आप के पास मुझे अपने साथ न रखने का उचित कारण होगा।

2 अर्थात् उस में छेद कर दूँ।

وَأَقْرَبَ رَحْمًا

को उन का पालनहार, इस के बदले उस से अधिक पवित्र और अधिक प्रेमी प्रदान करे।

82. और रही दीवार तो वह दो अनाथ बालकों की थी। और उस के भीतर उन का कोष था। और उन के माता-पिता पुनीत थे तो तेरे पालनहार ने चाहा कि वह दोनों अपनी युवा अवस्था को पहुँचें और अपना कोष निकालें, तेरे पालनहार की दया से। और मैं ने यह अपने विचार तथा अधिकार से नहीं किया^[1] यह उस की वास्तविकता है जिसे तुम सहन नहीं कर सके।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتَهُ عَنْ أَمْرِي ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا

83. और (हे नबी!) वे आप से जुलकरनैन^[2] के विषय में प्रश्न करते हैं। आप कह दें कि मैं उन की कुछ दशा तुम्हें पढ़ कर सुना देता हूँ।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقُرْنَيْنِ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا

- 1 यह सभी कार्य विशेष रूप से निर्दोष बालक का बंध धार्मिक नियम से उचित न था। इस लिये मूसा (अलैहिस्सलाम) इस को सहन न कर सके। किन्तु ((ख़िज़्र)) को विशेष ज्ञान दिया गया था जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास नहीं था। इस प्रकार अल्लाह ने जता दिया कि हर ज्ञानी के ऊपर भी कोई ज्ञानी है।
- 2 यह तीसरे प्रश्न का उत्तर है जिसे यहूदियों ने मक्का के मिश्रणवादियों द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कराया था। जुलकरनैन के आगामी आयतों में जो गुण-कर्म बताये गये हैं उन से विद्वित होता है कि वह एक सदाचारी विजेता राजा था। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के शोध के अनुसार यह वही राजा है जिसे यूनानी साईरस, हिब्रु भाषा में खोरिस तथा अरब में खुसरु के नाम से पुकारा जाता है। जिस का शासन काल 559 ई॰ पूर्व है। वह लिखते हैं कि 1838 ई॰ में साईरस की एक पत्थर की मूर्ति अस्तख़र के खण्डरों में मिली है। जिस में बाज पक्षी के भाँति उस के दो पंख तथा उस के सिर पर भेड़ के समान दो सींग हैं। इस में मीडिया और फारस के दो राज्यों की उपमा दो सींगों से दी गयी है। (देखिये: तर्जमानुल कुर्आन, भाग-3 पृष्ठ-436-438)

84. हम ने उसे धरती में प्रभुत्व प्रदान किया, तथा उसे प्रत्येक प्रकार का साधन दिया।

85. तो वह एक राह के पीछे लगा।

86. यहाँ तक कि जब सूर्यास्त के स्थान तक^[1] पहुँचा, तो उस ने पाया कि वह एक काली कीचड़ के स्रोत में डूब रहा है। और वहाँ एक जाति को पाया। हम ने कहा: हे जुलकर्नैन! तू उन्हें यातना दे अथवा उन में अच्छा व्यवहार बना।

87. उस ने कहा: जो अत्याचार करेगा, हम उसे दण्ड देंगे। फिर वह अपने पालनहार की ओर फेरा^[2] जायेगा, तो वह उसे कड़ी यातना देगा।

88. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार करे तो उसी के लिये अच्छा प्रतिफल (बदला) है। और हम उसे अपना सरल आदेश देंगे।

89. फिर वह एक (अन्य) राह की ओर लगा।

90. यहाँ तक कि सूर्योदय के स्थान तक पहुँचा। उसे पाया कि ऐसी जाति पर उदय हो रहा है जिस से हम ने उन के लिये कोई आड़ नहीं बनायी है।

91. उन की दशा ऐसी ही थी, और उस (जुलकर्नैन) के पास जो कुछ था हम उस से पूर्णतः सूचित हैं।

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝

فَاتَّبَعَ سَبَبًا ۝

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَرْجُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ ۖ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلُوبًا يَدُورُ الْقُرْنَيْنِ ۖ وَإِنَّا أَنْتَعَدِبَ وَإِنَّا أَنْتَعِدَ فِيهِمْ حُسْنًا ۝

قَالَ إِنَّمَا مَنِ ظَلَمَ فَلْيُصَوِّفْ لَعَذَابُهُ ثَمِيرًا ۝

رَبِّهِ ۖ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا يُكْرَهُ ۝

وَأَنَّا مَنِ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءُ الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ۝

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ يَجْعَلْ لَهُمُ مِن دُونِهَا يَسْرًا ۝

كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۝

1 अर्थात् पश्चिम की अन्तिम सीमा तक।

2 अर्थात् निधन के पश्चात् प्रलय के दिन।

92. फिर वह एक दूसरी राह की ओर लगा।

فَمَاتَّبَعْ سَبِيلًا ۝

93. यहाँ तक कि जब दो पर्वतों के बीच पहुँचा तो उन दोनों के उस ओर एक जाति को पाया, जो नहीं समीप थी कि किसी बात को समझे^[1]

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۝

94. उन्होंने ने कहा: हे जुल करनैन! वास्तव में याजूज तथा माजूज उपद्रवी हैं इस देश में तो क्या हम निर्धारित कर दें आप के लिये कुछ धन। इसलिये कि आप हमारे और उन के बीच कोई रोक (बंध) बना दें?

قَالُوا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝

95. उस ने कहा: जो कुछ मुझे मेरे पालनहार ने प्रदान किया है वह उत्तम है। तो तुम मेरी सहायता बल और शक्ति से करो, मैं बना दूँगा तुम्हारे और उन के मध्य एक दृढ़ भीत।

قَالَ مَا مَكْنِيَ فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝

96. मुझे लोहे की चादरें ला दो। और जब दोनों पर्वतों के बीच दीवार तय्यार कर दी, तो कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक कि जब उस दीवार को आग (के समान लाल) कर दिया, तो कहा: मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ ताँबा उँडेल दूँ।

أَتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ أَتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۝

97. फिर वह उस पर चढ़ नहीं सकते थे और न उस में कोई सेंध लगा सकते थे।

فَمَا اسْتَطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۝

98. उस (जुल करनैन) ने कहा: यह मेरे पालनहार की दया है। फिर जब मेरे पालनहार का वचन^[2] आयेगा तो

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِنِّي فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۝

1 अर्थात् अपनी भाषा के सिवा कोई भाषा नहीं समझती थी।

2 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का समय है। जैसा कि सहीह बुखारी हदीस

वह इसे खण्ड-खण्ड कर देगा। और मेरे पालनहार का वचन सत्य है।

99. और हम छोड़ देंगे उस^[1] दिन लोगों को एक दूसरे में लहरें लेते हुये। तथा नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, और हम सब को एकत्रित कर देंगे।

وَتَرْكُنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَكُوْجِرُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جُمُعًا ۝

100. और हम सामने कर देंगे उस दिन नरक को काफ़िरो के समक्ष।

وَعَرَّضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرَضًا ۝

101. जिन की आँखे मेरी याद से पर्दे में थीं, और कोई बात सुन नहीं सकते थे।

لِلَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْمَعُونَ سَمْعًا ۝

102. तो क्या उन्होंने सोचा है जो काफ़िर हो गये कि वह बना लेंगे मेरे दासों को मेरे सिवा सहायक? वास्तव में हम ने काफ़िरो के आतिथ्य के लिये नरक तैयार कर दी है।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّا نَتَّخِذُ عِبَادِي مِنْ دُونِ آلِيَاءٍ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۝

103. आप कह दें कि क्या हम तुम्हें बता दें कि कौन अपने कर्मों में सब से अधिक क्षतिग्रस्त है?

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝

104. वह हैं, जिन के संसारिक जीवन के सभी प्रयास व्यर्थ हो गये, तथा वह समझते रहे कि वे अच्छे कर्म कर रहे हैं।

الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝

105. यही वह लोग हैं, जिन्होंने ने नहीं माना अपने पालनहार की आयतों

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِلَّا يَتَذَكَّرُ بِهِ

नं० 3346 आदि मे आता है कि क्यामत आने के समीप याजूज-माजूज वह दीवार तोड़ कर निकलेंगे, और धरती में उपद्रव मचा देंगे।

- 1 इस आयत में उस प्रलय के आने के समय की दशा का चित्रण किया गया है जिसे जुलकर्नैन ने सत्य वचन कहा है।

तथा उस से मिलने को, अतः हम प्रलय के दिन उन का कोई भार निर्धारित नहीं करेंगे।^[1]

106. उन्हीं का बदला नरक है, इस कारण कि उन्होंने कुफ़्र किया, और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया।

107. निश्चय जो ईमान लाये और सदाचार किये, उन्हीं के आतिथ्य के लिये फिरदौस^[2] के बाग़ होंगे।

108. उस में वे सदावासी होंगे, उसे छोड़ कर जाना नहीं चाहेंगे।

109. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि सागर मेरे पालनहार की बातें लिखने के लिये स्याही बन जायें, तो सागर समाप्त हो जायें, इस से पहले कि मेरे पालनहार की बातें समाप्त हों, यद्यपि उतनी ही स्याही और ले आयें।

110. आप कह दें मैं तो तुम जैसा एक मनुष्य पुरुष हूँ, मेरी ओर प्रकाशना (वह्नी) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य बस एक ही पूज्य है। अतः जो अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो उसे चाहिये कि सदाचार करे। और साझी न बनाये अपने पालनहार की इबादत (वन्दना) में किसी को।

فَحِطَّتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزَنًا ۝

ذَٰلِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا الْيَتِيمَ
وَرُسُلَهُمْ هُزُوًا ۝

إِنَّ الدِّينَ أَمْنٌ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ
لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادَ الْكَلِمَاتِ لَرَبَّيْ لَنفَدَ الْبَحْرُ
مَبْلً أَنْ تَقْدِرَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جُنُتْ بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ الْوَحْيُ وَاللَّهُ وَاحِدٌ
فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَادِقًا وَلَا يُشْرِكْ
بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

1 अर्थात् उन का हमारे यहाँ कोई भार न होगा। हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: क्यामत के दिन एक भारी भरकम व्यक्ति आयेगा। मगर अल्लाह के सदन में उस का भार मच्छर के पंख के बराबर भी नहीं होगा। फिर आप ने इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुखारी, हदीस नं० 4729)

2 फिरदौस: स्वर्ग के सर्वोच्च स्थान का नाम है। (सहीह बुखारी: 7423)